3.5 भक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

जार्ज ग्रियर्सन ने भक्ति आंदोलन पर विचार करते हुए लिखा था कि इसका आगमन "बिजली की चमक के समान अचानक" हुआ था। लेकिन हम बता चुके हैं कि भक्ति आंदोलन का आरंभ कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। 14वीं-15वीं सदी में भक्ति आंदोलन के जन्म से पहले ही दक्षिण में भक्ति का व्यापक प्रसार हो चुका था। यह सही है कि भक्ति आंदोलन का उदय तत्कालीन परिस्थितियों की देन था, लेकिन इस पर विभिन्न धार्मिक मतों के प्रभाव से भी इंकार नहीं किया जा सकता। भक्ति आंदोलन 14वीं से 17वीं सदी के बीच विद्यमान रहा है। इसमें कई धाराएँ और उप-धाराएँ रही हैं। हम इनका अध्ययन आगे करेंगे। इससे पहले हमें भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताओं का अध्ययन अवश्य कर लेना चाहिए ताकि हम इस बात को अच्छी तरह समझ सकें कि भक्ति काव्य की सामान्य आधारभूमि क्या है।

3.5.1 भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएँ

भक्ति के स्वरूप पर विचार करते हुए हमने बताया था कि ईश्वर की उपासना के क्षेत्र में भक्ति का क्या महत्व है। भक्ति आंदोलन पर विचार करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने निम्नलिखित सामान्य विशेषताओं का उल्लेख किया है:

1 प्रेम ही परम पुरुषार्थ है, मोक्ष नहीं।
2 भगवान के प्रति प्रेम कौलीन्य से बड़ी चीज है।
3 भक्त भगवान से भी बड़ा है।
4 भक्ति के बिना शास्त्र-ज्ञान और पांडित्य व्यर्थ है।
5 नाम रूप से भी बढ़कर है।

अगर भक्ति की इन विशेषताओं पर विचार करें तो हम समझ सकते हैं कि भक्ति के मार्ग में जाति-पाँति, शास्त्र ज्ञान, आचार-विचार आदि का कोई महत्व नहीं था। ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम और उसके नाम का स्मरण यही सबसे महत्वपूर्ण तत्व थे, जो भक्ति काव्य के आधार बने। सगुण-निर्गुण तथा राम और कृष्ण का लीला गान आदि बातें इसी के बाद आती हैं। उपर्युक्त बातों के आधार पर हम भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएँ बता सकते हैं, जो संपूर्ण भक्ति काव्य पर लागू की जा सकती हैं।

1 **ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम** : ईश्वर के प्रति तीव्र प्रेम का अनुभव करना ही भक्त की पहचान है। हम सभी भक्त कवियों में इस विशेषता को समान रूप से पा सकते हैं। चाहे वे निर्गुण को मानते हों या सगुण को, चाहे वे राम की उपासना करते हों या कृष्ण की। अपने आराध्य के प्रति गहरी अनुरक्ति और उसको पाने की लालसा, उनमें समान रूप से मिलती हैं। कबीर कहते हैं:

अँखड़ियाँ झाँई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़या, राम पुकारि पुकारि।।

इसी तरह मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' में प्रेम तत्व को ही प्रधानता दी है। मीरा तो अपने को प्रेम दिवानी कहती ही हैं। सूर और तुलसी का संपूर्ण साहित्य ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम का ही परिणाम है। तुलसी कहते हैं:

एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास।
एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास।।

2 **समानता का भाव** : भक्ति के मार्ग में सांसारिक भेदभाव का कोई स्थान नहीं है। इस बात को सभी भक्त कवियों ने स्वीकार किया है। तुलसीदास जो वर्णाश्रम धर्म का समर्थन करते हैं, भक्ति के क्षेत्र में किसी तरह के भेदभाव को स्वीकार नहीं करते इसीलिए उनके राम शबरी के झूठे बेर खा लेते हैं और निषादराज को अपने भाई भरत के समान प्रिय बताते हैं। सूरदास की गोपियाँ भी प्रेम के मार्ग में विधि-निषेधों को स्वीकार नहीं करतीं? कबीर आदि निर्गुण कवियों ने तो जाति-पाँति का विरोध दृढ़तापूर्वक किया है।

3 **गुरु महिमा** : ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम भक्ति की केन्द्रीय विशेषता है लेकिन भक्त कवियों ने ईश्वर से भी बड़ा उस गुरु को माना है जिसने ईश्वर के साक्षात् रूप से उनका परिचय कराया है। इसीलिए कबीर गुरु को गोविंद से बड़ा मानते हैं। वे कहते हैं:

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागों पाँव।
बलिहारी वा गुरु की जिन गोविंद दिया दिखाय।।

जायसी के 'पद्मावत' में भी सुआ राजा रत्नसेन को पद्मावती के रूप सौंदर्य से परिचित कराता है। रत्नसेन आत्मा, पद्मावती परमात्मा और सुआ गुरु का प्रतीक है। तुलसीदास ने "मानस" के

आरंभ में ही गुरु की वंदना करते हुए कहा है: बंदौ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि"। कहने का तात्पर्य यही है कि प्राय: सभी भक्त कवि गुरु के महत्व को स्वीकार करते हैं।

4 शास्त्र-ज्ञान की अनावश्यकता : भक्त कवियों ने शास्त्र ज्ञान और पांडित्य को भक्त के लिए आवश्यक नहीं माना है बल्कि कभी-कभी तो इन्हें भक्ति के मार्ग की बाधा ही स्वीकार किया है। कबीर इसीलिए कहते हैं कि "पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोई।" सूरदास की गोपियाँ उद्धव के शास्त्र-ज्ञान का मजाक उड़ाती हैं। "आयो घोष बड़ो व्योपारी/लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आय उतारी।" तुलसीदास ने भी बार-बार इस बात को दोहराया है कि शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा ईश्वर की कृपा अधिक महत्वपूर्ण है। उसी की कृपा से अज्ञानी और पापी भी भवसागर पार हो जाते हैं।

5 नाम-महिमा : भक्ति के जिन नौ साधनों का ऊपर वर्णन किया गया है उनमें स्मरण, कीर्तन और श्रवण का संबंध नाम-महिमा से ही है। भक्त कवियों ने राम के नाम को राम से भी बढ़कर माना है। कबीर कहते हैं "राम नाँव ततसार है"। वे यह भी कहते हैं कि "कबीर सुमिरण सार है और सकल जंजाल" इसी प्रकार तुलसीदास ने 'विनय पत्रिका' के कई पदों में ऐसे भक्तों का बार-बार उदाहरण दिया है जिन्होंने नाम स्मरण के बल पर प्रभु की कृपा प्राप्त की। "रामचरित मानस" में उन्होंने कलिकाल में कल्याण का सबसे बड़ा साधन राम से भी बढ़कर उनके नाम को माना है।

6 अहंकार का त्याग : भक्त कवियों में यह विशेषता भी समान रूप से पाई जाती है। कबीरदास इसीलिए कहते हैं कि मैं तो राम का कुत्ता हूँ और मोती मेरा नाम है। मेरे गले में राम नाम का पट्टा बंधा है, वह जिधर खींचता है, मैं उधर ही जाता हूँ। सूरदास के विनय संबंधी पदों में भी हम ऐसा ही समर्पण और दैन्य भाव पाते हैं। तुलसी ने तो बार-बार कहा है कि

राम सो बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो?
राम सो खरो है कौन, मोसों कौन खोटो?

7 लोक जीवन से जुड़ाव : भक्त कवि किसी राजा या बादशाह के दरबारी कवि नहीं थे। इनमें से कई तो कोई न कोई व्यवसाय करते थे।

कबीर पेशे से जुलाहा थे, रैदास चर्मकार। तुलसीदास कथावाचक थे। तुलसीदास ने तो स्पष्ट रूप से लिखा था कि जो कवि प्राकृत जनों राजा-महाराजा का गुणगान करता है उसकी कविता पर सरस्वती अपना सिर धुनकर पछताती है। वस्तुत: भक्त कवियों ने राम को ही अपना राजा समझा और सामान्य जनता के बीच ही अपनी कविता ले गये। इस तरह उनकी कविता में लोक जीवन का समावेश हुआ।

इस प्रकार हम पाते हैं कि भक्त कवियों में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो सभी में समान रूप से मिलती हैं। भक्ति का मार्ग ईश्वर की आराधना का सरल, सहज और सर्वसुलभ मार्ग था। इस मार्ग में छोटे-बड़े और ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं था।

यहाँ शास्त्रीय ज्ञान और कठोर साधना की आवश्यकता नहीं थी केवल प्रभु के प्रति गहरा प्रेम और आत्मसमर्पण ही पर्याप्त था। इसलिए इस काव्य को इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई। लेकिन इस काव्य में कई धाराएँ अंतर्निहित थीं। भक्ति काव्य की अब तक बतायी गयी सामान्य विशेषताओं के अतिरिक्त धाराओं की अपनी विशेषताएँ थीं, जिनके कारण उनकी अपनी अलग पहचान बनी। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भक्त कवियों को दो श्रेणियों में विभाजित किया है। एक हैं निर्गुण भक्त कवि और दूसरे हैं सगुण भक्त कवि। इसी आधार पर उन्होंने भक्ति काव्य को भी निर्गुण भक्ति काव्य और सगुण भक्ति काव्य नामक भेदों में विभाजित किया। कबीर, जायसी, रैदास, नानक, दादूदयाल आदि को निर्गुण काव्य धारा में और सूरदास, नंददास, तुलसीदास आदि को सगुण काव्य धारा में सम्मिलित किया है। निर्गुण काव्य धारा और सगुण काव्य धारा में मूलभूत अंतर यह है कि निर्गुण कवि ईश्वर को निर्गुण (यानी सांसारिक गुणों से रहित या उनसे ऊपर), निराकार (रूप और आकार से रहित अर्थात् वह कोई रूप धारण नहीं करता) मानते हैं जबकि सगुण कवि ईश्वर को सगुण (अर्थात् सभी गुणों से युक्त परंतु उनसे परे भी), साकार (अर्थात् ईश्वर कोई भी रूप धारण करने में सक्षम और इस नाम रूपात्मक जगत में रूप धारण करके अवतरित होता है)। ईश्वर की परिकल्पना का यह अंतर मामूली बात नहीं है। इसी कारण इन दोनों के काव्य की विषय वस्तु में अंतर आया है और जीवन और जगत संबंधी उनके दृष्टिकोण में भी अंतर दिखाई देता है। आगे के पृष्ठों में हम इन दोनों प्रवृत्तियों का किंचित् विस्तार से उल्लेख करेंगे।

3.5.2 निर्गुण भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएँ

निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास : ईश्वर को निर्गुण निराकार मानना निर्गुण भक्ति काव्य की आधारभूत विशेषता है। निर्गुणपंथी अवतारवाद में विश्वास नहीं करते। उनका दृढ़ मत है कि ईश्वर निर्गुण और निराकार है। वह समस्त सृष्टि में व्याप्त है, लेकिन वह मनुष्य या अन्य प्राणी का रूप धारण नहीं करता। ईश्वर निर्गुण निराकार है, इसलिए उसकी मूर्ति बनाकर पूजा करना गलत है। समस्त सृष्टि उसी की रचना है इसलिए भी उसकी मूर्ति बनाना या मंदिर बनाना व्यर्थ है।

लौकिक प्रेम द्वारा आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति : निर्गुण पंथी भक्त कवियों ने ईश्वर को निर्गुण निराकार तो माना, किंतु उसकी उपासना का भी एक मार्ग ढूँढ लिया। उन्होंने भक्ति की उपासना का मार्ग योग और गुह्य साधना-पद्धति में खोजा था। नाथ और सिद्ध इसी परंपरा में आते हैं। साधना का यह मार्ग सामान्य जनता को आकृष्ट नहीं कर सका। कबीर आदि संतों ने ईश्वर के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए लौकिक संबंधों को आधार बनाया। कबीर ने ईश्वर को अपना 'भरतार' और स्वयं को उसकी 'दुलहिन' माना। इसी प्रकार सूफी कवियों ने लौकिक प्रेम कथाओं के माध्यम से ईश्वर के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्ति दी।

धार्मिक रूढ़ियों और सामाजिक कुरीतियों का विरोध : निर्गुणपंथी केवल ईश्वर प्रेम में लीन रहने वाले भक्त नहीं थे। उन्हें ईश्वर की बनाई इस सृष्टि से भी उतना ही प्रेम था। इसीलिए उन्होंने इसमें व्याप्त बुराइयों और अनाचारों का विरोध किया। उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों और कर्मकांडों को माया कहा। उनके अनुसार यह विश्वास करना कि काशी में मरने से स्वर्ग मिलेगा, या गंगा में नहाने से पुण्य होता है, केवल मन का भ्रम है। ईश्वर और जीव तो जल और बर्फ की तरह है, दोनों में कोई मूलभूत अंतर नहीं है।

पांणी ही तैं हिम भया, हिम ह्वै गया बिलाइ।
जो कुछ था सोई भया, अब कछू कह्या न जाइ।।

जाति प्रथा का विरोध एवं हिंदू-मुस्लिम एकता का समर्थन : जीव और ईश्वर की एकता के कारण ही निर्गुण पंथी जाति-पाँति और ऊँच-नीच के भेद में विश्वास नहीं करते थे। कबीर और अन्य संत कवियों ने बार-बार इस बात को दोहराया है कि ब्राह्मण और शूद्र एक ही ईश्वर की संतान है और उनमें भेद करना गलत है। "एक जोति थैं सब उपजा कौन ब्राह्मन कौन सूदा"। निर्गुण पंथी जाति के भेद को तो अस्वीकार करते ही थे, हिंदू और मुस्लिम के बीच भी कोई फर्क नहीं करते थे। कबीर, नानक आदि ने हिंदू मुस्लिम एकता पर विशेष रूप से बल दिया। कबीर ने हिंदू और इस्लाम दोनों धर्मों में व्याप्त अंधविश्वासों पर चोट की। दूसरी ओर मलिक मुहम्मद जायसी, मंझन, कुतुबन आदि सूफी कवियों ने हिंदू लोक कथाओं को अपनाकर अपनी सहिष्णुता और उदारता का परिचय दिया।

रहस्यवाद का प्रभाव : निर्गुण काव्य धारा की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, उसका रहस्यवाद। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में ईश्वर की परोक्ष सत्ता का आभास पाना, उनसे अपना संबंध जोड़ना और उस सत्ता के साथ अपने को एकाकार महसूस करना ही रहस्यवाद है। शुक्लजी ने रहस्यवाद को दो प्रकार का बताया है– भावात्मक रहस्यवाद और साधनात्मक रहस्यवाद। भावात्मक रहस्यवाद में जीव ईश्वर के प्रति गहन प्रेमानुभूति महसूस करता है। जायसी के यहाँ इसी भावात्मक रहस्यवाद को देखा जा सकता है। कबीर भी जब अपने को "राम की बहुरिया" मानकर ईश्वर के प्रति गहरी विरह भावना को व्यक्त करते हैं तो यह भावात्मक रहस्यवाद ही है। लेकिन साधनात्मक रहस्यवाद में योग की साधना पद्धति का सहारा लिया जाता है। कबीर के यहाँ इस साधनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

निर्गुण भक्ति काव्यधारा पर नाथों-सिद्धों, सूफीमत, अद्वैतवाद और वैष्णव भक्ति का प्रभाव था। निर्गुण काव्यधारा ने इन सभी को अपनाया और इन्हीं में से अपना रास्ता निकाला। नाथों और सिद्धों की परंपरा से उन्होंने धार्मिक पाखंड का खंडन और जाति-पाँति का विरोध लिया। उन्होंने योग-साधना की पद्धति का प्रभाव भी इन्हीं से ग्रहण किया। सूफी मत से उन्होंने प्रेम तत्व प्राप्त किया। सूफी काव्य का तो यह आधार था ही। उन पर ईश्वर के स्वरूप और माया के सिद्धांत का प्रभाव अद्वैतवाद के कारण था। वैष्णव परंपरा से उन्होंने अहंकार का त्याग, ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम और "राम" नाम का आधार लिया। इस प्रकार निर्गुण काव्य धारा विभिन्न परंपराओं का समागम है।

निर्गुण काव्य धारा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने दो शाखाओं में विभाजित किया है—कबीर आदि संतों की ज्ञानाश्रयी शाखा और जायसी आदि सूफी कवियों की प्रेममार्गी शाखा। इनका अध्ययन हम आगे करेंगे।

3.5.3 सगुण भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएँ

ईश्वर के सगुण और साकार रूप में विश्वास करने वाले भक्त कवियों के काव्य को सगुण काव्यधारा नाम दिया गया। हमने पहले इस बात पर विचार किया था कि आद्यशंकराचार्य के मत ने उपासना के क्षेत्र में भक्ति के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया था। शंकराचार्य के सिद्धांत 'अद्वैतवाद' के अनुसार "ईश्वर ही सत्य है, जगत मिथ्या है"। माया के कारण ही मनुष्य संसार को सच मानता है। शंकराचार्य के अनुसार केवल ब्रह्म ही सत्य है इसलिए आत्मा भी ब्रह्म ही है। ऐसी स्थिति में भक्ति संभव नहीं है क्योंकि भक्ति के लिए भक्त और भगवान के बीच किसी न किसी रूप में भेद की चेतना होना आवश्यक है। यही कारण है कि रामानुजाचार्य ने जीव, जगत और ईश्वर के संबंधों को लेकर एक नया दार्शनिक मत प्रस्तुत किया।

रामानुज (11वीं शती) के अनुसार जीव, जगत और ईश्वर के बीच उसी तरह का संबंध है जिस तरह का संबंध शरीर और उसके अंगों के बीच होता है। जिस प्रकार शरीर के अंग शरीर से भिन्न भी हैं और शरीर से एकाकार भी, उसी तरह जीव भी ईश्वर से अलग भी है और उसका अंग भी। इस प्रकार, रामानुज भी जीव और ईश्वर के बीच अद्वैतता (दो का निषेध) मानते हैं लेकिन यह विशिष्ट किस्म की अद्वैतता है। इसीलिए रामानुज के सिद्धांत को "विशिष्टाद्वैत" कहा जाता है। रामानुज माया की सत्ता को भी स्वीकार नहीं करते।

रामानुज का मानना है कि जीव ब्रह्म से उत्पन्न होकर उसी में लीन हो जाता है। जीव अपने अंगी रूप ब्रह्म को प्राप्त करना चाहता है। भक्ति उसकी इसी इच्छा की पूर्ति का मार्ग है। इस सिद्धांत में ईश्वर की सगुण रूप में कल्पना की गयी है। दास्य भाव की भक्ति को आदर्श भक्ति माना गया है। कबीर के गुरु रामानंद रामानुज की ही परंपरा से संबद्ध थे।

मध्वाचार्य (1188-1276) का सिद्धांत "द्वैतवाद" कहलाता है। इसमें जीव और ईश्वर को भिन्न-भिन्न माना गया है। ईश्वर को इस सृष्टि का कर्त्ता माना गया है। संसार के प्रत्येक जीव एक दूसरे से अलग हैं। मोक्ष प्राप्ति के बाद भी भेद बना रहता है। मध्वाचार्य जगत को भी पूर्णतः सत्य मानते हैं। चैतन्य महाप्रभु का सिद्धांत इसी मत की एक शाखा है।

वल्लभाचार्य (1478-1530) का दार्शनिक मत शुद्धाद्वैत है। शंकराचार्य ने माया का अस्तित्व माना था। वल्लभाचार्य ने माया रहित शुद्ध ब्रह्म को जगत का कारण बताया। उनके अनुसार कृष्ण ही परमब्रह्म हैं। वे आत्मा में भी वास करते हैं और बाह्य रूप में लीला भी करते हैं। कृष्ण का अनुग्रह प्राप्त करना ही भक्त का परम लक्ष्य है। यह "अनुग्रह" ही पुष्टि है इसलिए वल्लभाचार्य के सिद्धांत को पुष्टि मार्ग भी कहते हैं। राधा और कृष्ण की उपासना यहाँ भी स्वीकार की गयी है।

सगुण भक्ति धारा पर इन्हीं दार्शनिक मतों का प्रभाव रहा है। उपर्युक्त मतों का अध्ययन करने से हम कुछ निष्कर्षों तक पहुँच सकते हैं। ईश्वर और जीव की सत्ता चाहे अभिन्न हो लेकिन भक्ति के लिए उनकी स्वतंत्र सत्ता मानना आवश्यक है। दूसरे, जीव का चरम लक्ष्य ईश्वर की कृपा प्राप्त करना है, यही भक्ति का लक्ष्य है। तीसरे, समस्त सृष्टि ईश्वर की लीला है। ईश्वर की लीला का ध्यान करना, उनका गायन करना भक्ति का अंग है। कृष्ण, राम आदि अवतार इसी ईश्वर के सगुण रूप हैं। राधा कृष्ण की शक्ति है और इन दोनों की आराधना करना आवश्यक है। इस प्रकार सगुण भक्ति काव्यधारा में ईश्वर को सगुण साकार ही माना गया है।

अवतारवाद में विश्वास: भगवद्गीता में कृष्ण कहते हैं कि जब-जब धर्म की ग्लानि होती है और अधर्म का उत्थान होता है, तब-तब मैं दुष्टों का दलन करने और साधुओं का परित्राण करने के लिए अवतार लेता हूँ। गोस्वामी तुलसीदास भी गीता के इस मत में विश्वास करते हैं और 'रामचरित मानस' में वे इस बात को दोहराते हैं। अवतारवाद के सिद्धांत के पीछे गीता की इसी धारणा का प्रभाव है। इसीलिए सगुण कवियों ने अपनी भक्ति का आलंबन किसी न किसी अवतार (राम और कृष्ण) को बनाया है।

अवतार के पीछे एक और कारण माना गया है। प्रभु द्वारा अपने भक्तों पर अनुग्रह करना। भक्तों के लिए ईश्वर अपनी लीला का विस्तार करता है। समस्त सृष्टि ईश्वर की लीला है, परंतु ईश्वर भक्तों के लिए अवतार लेकर भी लीला करता है। राम और कृष्ण का चरित्र ईश्वर के ऐसे ही लीला रूप हैं।

ईश्वर की लीलाओं का गायन: सगुण भक्त कवियों ने ईश्वर की लीलाओं का गायन किया है। सगुण कृष्ण भक्त कवि तो यह भी मानते हैं कि वृंदावन में भगवान् कृष्ण गोपियों के साथ नित्यलीला में रत हैं। तुलसीदास भी मानते हैं कि प्रत्येक कल्प में राम बार-बार जन्म लेते हैं और बार-बार राम-कथा दोहराई जाती है। सगुण भक्त कवि ईश्वर की लीला के गायन को भक्ति का

आधार मानते हैं। उनका विश्वास है कि यह भक्ति ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होती है। जिस व्यक्ति को ईश्वर की भक्ति प्राप्त हो जाती है उसके कर्म चाहे कितने ही बुरे क्यों न रहे हों उसकी ओर भगवान् अपने आप खींचे चले आते हैं।

भक्ति का विशिष्ट रूप : सगुण भक्ति दो प्रकार की होती है--1 रागानुगा भक्ति और 2 वैधी भक्ति। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "कर्त्तव्य बुद्धि से जो नियम स्थिर किये जाते है, उसे विधि कहते हैं और स्वाभाविक रुचि से जो वृत्ति उत्तेजित होती है, उसे राग कहते हैं।" रागानुगा भक्ति में ईश्वर के प्रति तन्मयता और अनुराग का आधिक्य होता है जबकि वैधी भक्ति में शास्त्रों के विधि निषेध का पालन करना होता है।

कृष्ण भक्त कवि मानते थे कि ब्रज के लोगों की कृष्ण के प्रति उपात्मिका भक्ति थी, लेकिन अब यह भक्ति संभव नहीं है। हम केवल उनका अनुसरण कर सकते हैं। रागात्मिका भक्ति का अनुकरण होने के कारण ही इसे रागानुगा भक्ति कहते हैं।

तुलसीदास की भक्ति वैधी भक्ति है। वैधी भक्ति ईश्वर के ऐश्वर्य रूप का गायन करती है अर्थात् उसके स्वामी होने या श्रेष्ठत्व के भाव को व्यक्त किया जाता है। तुलसीदास अपने इष्ट को अपना स्वामी मानते हैं स्वयं को उनका दास। इसीलिए तुलसी की भक्ति दास्यभाव की भक्ति कही जाती है।

रागानुगा भक्ति में ईश्वर की भक्ति सख्यभाव से की जाती है। सूरदास आदि कृष्ण भक्त कवियों की भक्ति इसी कोटि में आती है। वे ईश्वर के माधुर्य रूप का गायन करते हैं। कृष्ण के बाल रूप, गोपियों के साथ रासलीला आदि का गायन करना इस भक्ति की विशिष्टता है।

सगुण भक्ति काव्यधारा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने दो शाखाओं में विभाजित किया है : राम भक्ति शाखा और कृष्ण भक्ति शाखा।
सगुण काव्य धारा की इन उपर्युक्त शाखाओं का विस्तृत अध्ययन हम आगे करेंगे।

अभ्यास

1 सगुण भक्ति काव्य और निर्गुण भक्ति काव्य में मुख्य अंतर क्या-क्या हैं? कोई पांच अंतर बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

बोध प्रश्न

5 निम्नलिखित कथनों में से कौन-से सही हैं और कौन-से गलत। सही कथन पर (√) और गलत कथन पर (×) का निशान लगाइए।

क) सगुण भक्त कवि अवतारवाद में विश्वास करते हैं। ( )

ख) ईश्वर की लीलाओं का गायन निर्गुण काव्य की विशेषता है। ( )

ग) निर्गुण काव्य धारा में धार्मिक अंधविश्वासों का खंडन मिलता है। ( )

घ) रागानुगा भक्ति में शास्त्र सम्मत विधि-निषेधों का पालन आवश्यक है। ( )

ड) ज्ञानाश्रयी कवियों ने लौकिक प्रेम गाथाओं को काव्य का विषय बनाया है। ( )

6 अद्वैतवाद' मत के संस्थापक थे:

क) वल्लभाचार्य